

श्रीगणेशाय नम ॥ नणावव नमाहाहै लवयू ऊा ॥ नक गांऊि
यक। ऊऊमानं पृष्यहाऊनयावक ॥ ऋघ। ऊऊमांनस्यवि
त्वऊाऊायांवव नमाहाहै लवष्वायन वधायवलदयाव
ननिन्निएथ पृष्यहाऊनंग मप्रीमामि ॥ श्रीसमयलमि

नुलाक्क क्रमपदानिह्निना नन्दलकि ॥ मृलीमा ह्षिं न्वायव
ऊुष्कं ऋकूलक्कलगगं पं झ्कंवा न्यषह्नु वस्रान ॥ पंव कान्न
न्यूननं पिवऊुवं ननलाम ह्नूलदं सं ह्ल षंयननमिन
मनगुन्नूववनं हेनवं श्रीकृऊल ॥ न्वमानका ग्रिनऊास्मन

हल लमिणामरु मा० गणमनि विश्वाह्निवादू नगाय्यू नन
ऊघ नाभ ष नानल्न साल। द वालेवक्रु साल वनवनक्रु
लभ व र्धनेकु तलन साम्य श्री कु ठिका ख्या वि गनकुन
न साझ्ला न दि थो थ मा यं० ॥ थं लक्षां वृङक निष्काप

त्रिगका श्री सिद्धि लक्ष्मि० पनाकर्प्यन सह ठिकन्यू कुन्दथव
लानि ०लषपालापला। सं साला लवद्० पक्षदहनि
निष्क म्पनवदि श्री मल्ल कुलरवा न्यू ञाद सहगाज
स ह्लिनायाउव०॥ काङ्का नक्कु णमिनेनकहदन०काप

ह्रविं वंहनाश्वातुश्वा कउ नादिन कहुडग ४ कन्डु काद
वाहुन ४ कल्या कानहमे न्वर्मुप्रेन श्रीसिद्धिपा८ग स्पर्नं
क्षीञानाद्कनायका विउर्मनद वामा हा किलव ॥ म
हाकालं महानोडुं महाकल्याणं नप्रहु लुलनूपं म
हाकामं कल्लिकापालषनि नं ॥ रव अट्टक्रष लंदवं त्रि
नेत्रं हलनप्रहं ॥ नमकमुमहाकालं नञ्जसं हान ना
लनं ४ ॥ सिद्धि नमु क्रियानमृ वूषि नकुधनागभ ॥ पूषि
नमु लनीन षं भकिन मुउं हनव ॥ सर्वविघ्निप्रण

मनं सर्व्वजन्मिकलं गुरु। आयुःपुत्रंच कामश्च लक्ष्मी
सन्ततिर्व्वर्द्धनं॥ पुष्पलाञ्जनं समर्पयामि। ग्राघा घ्रा
यक्षुम थदन्तु पुष्पलाञ्जनं समर्पयामि॥ नानिय॥ ॐ
३ ॐ आलमनत्वाय स्वाहा॥ ॐ ३ ह्रीं विद्यानत्वाय स्वाहा॥

ॐ ३ ह्रूं शिवनत्वाय स्वाहा॥ गुरुनमस्कारं॥ ॐ ३ अखण्डमण्डलः
मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरं। तत्पदं दर्शितं येन त
स्मै श्रीगुरवे नमः॥ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देव म
हेश्वरं। गुरुर्देव परंब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

ॐ ग पलम गुरुभ्योनम ॥ ॐ ग पनम श्री गुरुभ्योनम ॥
ॐ ग पनमाचार्य गुरुभ्योनम ॥ वलि॰ प धात्मायपादू
कां ॥ श्रूर्वा स ठ ल गात्मायपाद कां ॥ श्रू घ पागात्मायपा
कां ॥ धवक ॥ कू र्म्मात्मायपादू कां ॥ पा ल्स्र्य श्रू दृगं वि क

पा २

सं २

न मं ॥ ॐ ग ऊँ श्रू म्नायपद्दुठ ॥ वज मूडायाम्रवव ष्ठनं
ॐ ग ऊँ द्दुठ वज पं ठ न्म स्वाहा ॥ द ण हा न स्यनं ॐ ग
वलमक ल कूनम वल ऊँ कू द्दु ठ स्वाहा ॥ न्यास
ॐ कुं श्रू म्नायपद्दुठ ॥ क न ल्स्य ष न ध ॥ ॐ ग ऊँ क नि

ष्ठाभ्यां नम ॥ ॐ ग ह्रीं अनामिकाभ्यां नम ॥ ॐ ग ह्रूं मध्यमाभ्यां
नम ॥ ॐ ग ह्रूं तर्जनीभ्यां नम ॥ ॐ ग ह्रैं अङ्गुष्ठाभ्यां नम
॥ करन्यास ॥ ॐ ग ह्रैं हृदयाय नम ॥ ॐ ग ह्रीं शिरसे स्वा
हा ॥ ॐ ग ह्रूं शिखायै वषट् ॥ ॐ ग ह्रैं कवचाय हुं ॥ :

ॐ ग ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ ग ह्रूं अस्त्राय फट्ट ४ ॥ ह
ह्र लाङ्गन्यास ॥ जलपात्र पूजा ॥ श्री ऊन पात्रस्थाय
पादुकां ॥ ॐ ग ह्रूं आनन्दल क्लिन्नेन वानन्दः
विनाशिपन ॐ ग ह्रूं श्री ऊन पात्ररूद्दा

न कामपादुकां ॥ ॐ ऐं ह्रीं हृदमायलादि ॥ आवाहनादि
ध्येनू मूद्रा दर्शयेत् ॥ ममपती ॥ ॐ ऐं रक्तवर्णहेनवायवि
भ्रहंसहेनवायधीमह्गनानूड प्रवादमान ॥
सर्वलमुप्राकृनं ॥ देवपात्रपूजा ॥ ॐ ऐं अर्घपात्रा

नामपादुकां ॥ त्रिकूटमूद्रानवाल ॥ ॐ ऐं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः
प्रसूनर धानर ननगनर पचठर कहर वमर दमर
धा ध्यर विश्विर ह्रूँर रुहु क्रांश्रीमहा कौमानिका विधु
पादुकां ॥ ॐ ऐं सौं ज्ञानन्देन किंहेनवानन्द श्रीमहावि

श्वानागल्वनी श्रीं श्रीमद्घ पात्रहाकामेयं पादुकां ॥ नेत्रं
ह्रीं हृदयाय ... लोदि आवाहनादि ॥ यानि मुद्रा
दर्शयेत ॥ कं चू कूपमेद्यां हन शुद्धि ॥ नेत्रं ह्रीं श्रीं फ्रूं
ह्रौं ह्रौं घूं श्रीं ह्रीं नेत्रं ॥ ने वन्दनं पादुकां ॥ ह्रीं गुरव ...

पादुकां ॥ श्रीसिद्धनं पादुकां ॥ फ्रूं सर्वजन मोहनि पादुकां ॥
ह्रौं पृथ्व पादुकां ॥ क्रूसी पादुकां ॥ ह्रूंलि श्वाल पूजा ॥ दव
माधनं ॥ नेत्रं जनमोहनाव लिङ्कू कूष्टि कार्ये ह्रां ह्रीं ह्रूं धान
त्रे धान रूपा नामृ लि ह्रौं ह्रौं २ क्लिं लि २ विघ्न पादुकां ॥

च तु सं ख्याल मूत्र न नि लिक्त नं। ह्रैं ग ऊँ क्षक्ताय स्वाहा॥ पात

नं॥ ह्रैं क्लिनि विद्धं काहं लाये ह्रूं क्ष ग्राय स्वाहा॥ क्षव स्तुथनं

पात्र अध्यान अध्यानाम् मू ख क्षा ह्रूं क्लिनि २ विश्वं पाद क्षं

॥ (क्षेत्र मू द्वादनयस्व॥ समघ्रि॥ क्षा॰१० ध्यान॥ ह्रैं

६९

ग ऋं ख ल्कु कल सानाथं कल पल कुक्षालनं स्व क्ष

न्द स्र ति ना मत्र नि द हि क्र न लु यि नी ४॥ नक्षिध्यान हा

लं वृं नय॥ षडुनाभदि क्षाय॥ त्रिकूटमुद्रा॥ अध्याना

सु॥ ह्रैं ग जीं क्रीं ह्रूं लादि॥ आवाहनानि॥ यानि मुद्रां

दत्तमन्त्र ॥ ॐ ह्रीं देवदेवधन ॥ गायत्र्या पूजा ॥ ॐ ब्रह्म
ननमः ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ ॐ रुद्राय नमः ॥ ॐ लदानिवायनमः
॥ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कुलकुरु महाहासन संमोहन सकलनीथम
कुदय ह्रूं गकनानलाधिपतय ब्रह्म विष्णु रुद्र प्र

सनश्चालविधाविदकनताय स्वाहा छीसंपूर्ण क
लनमूलमनन ॥ ॐ गणपतयेन ह्रूं मः ॥ ॐ गमूल
येनमः ॥ ॐ ननन्यप्रेनमः ॥ ॐ ह्रूं कावय्य नमः
ॐ नमदायेनमः ॥ ॐ गनुक्षेनमः ॥ ॐ कौनि

क्षेनम॥ ॐ सप्तसमुद्रस्थानम॥ आवाहनादि
ध्यनम् त्रादशमत्॥ अर्घादि॥ वाक्य॥ ॐ उकां
वायुवीजं तदुपविवचनं वज्रपानितद्ध्रुं कातं वर्ण्ण
मुकेनदुपनिपनमंवक्लिं दिजं सदहसं॥ ॐ नदुं दिनुं

लयानं मितकमयवं क्लीनध्यानाग्रवकृद्धाकुं
गिनत्रंदहमिकुलमलंमनूतुल्याहिपापं॥ दद॥ प
प्रसान्नतपूठनचयिवांयनसर्वत॥ कामधेनु:
ध्रुवनिलं हापमामिलिवारूया॥ बलि॥ दधिउ

मापतिर्देवदेवानामनीवल्लहं । वाञ्छांकपद्रु

म्नानंयनह्यानननलल्पनः । प्पल । प्पनपुनविना

लिङ्गलिर्गेपूतविनाकिनि । ऊर्म्रिसर्प्पस्वन्रूपन

नात्रिलोकाकैनंनिव । कर्हि । ज्ञमन्द्रवीनकिना

हृंदेवान्नूंप्रियवल्लह । वांञ्छाकल्पनद्रुम्नानयननम्नान

नलल्पन । सारवल । स्ववृमननमह्यलादुमननमाली

नलंसदा । स्वरानुन्दह्लापिनादेवीश्रेवंन्नूनवहप्रप

पञ्चाम्नन । नथपर्वादिपयसंपवंत्रुक्लानिवा

तिठं ॥ पंच ठव्या समाप्यं कं पञ्चमन हापमाप्यह

॥ अतिहान ॥ स्वामी ॥ चन ॥ श्रीरव नुवन्द नंदि वं

गभ्या घस्यम स्वामी नाहनं ॥ आरु विन लला डाह

चन्द नं पति ७० र घ मां ॥ सिधल ॥ वीन न्वेनी मता

वीनवीनल स्म पिरू बिनं ॥ तेला क्वांकर्ष नीद विसिन्धुना

चू न्नूमू लमं ६ ॥ अकन ॥ अकनअेक्रुषा क्काम मं षर्म्म कामा

थ सिद्धि दं ॥ ङ्ः पिनं मयं वं नं द वी प न ग्रव प नानति

॥ द्दा ॥ क्षम नं द्दाक्षि विभ्मन्न खूल लिनं वि लव कृषा

भाम सुस्पर्शिनिरुद्धवनं वैसमं नत्र निर्म्मलं ॥ ऊऊ
मका ॥ यक्षापवीकं पनमं पवित्रं वज्ञापनर्य सहुऊं
पूलमान ॥ ग्रामूथमम्यं पूमिमंव हूस यक्षापविगं यत्र
मुनऊ ॥ अदृवाल ॥ नानावक्रुविवीतार्गसौमकार्म्या

सनिर्मित ॥ दवार्गेतृषलंत्रे छंरुलालपनमल्ल
नुथ वद्दमाये ॥ कूत्रविकामहिंदीवांपूर्लवनु
निरुंनिनं ॥ गनदलनिदवलंवदहिमविक्तिन
दलं ॥ स्वान ॥ नानापृथाहुगश्रनिमानगी

कुसुमादमं । सौभाग्यसिद्धिदं ॥ द्रुपृष्याश्याह
नमूलमं ४ ॥ पंचपनका ॥ पनकापत्रकर्ण
लाकर्णभा ० पविलम्बि । पञ्चरुनालिकाप
क्षदर्भ पक्षोमनिम्मिता । कर्णपनका ॥ शुद्ध

सिद्धलवल्लाहकं ॥ कर्णपनाकाकर्णसमूकां । उत्प
लपत्रमध्यनचतुष्का स्नानुक्रमेनौ ४ ॥ ध्यात्वा
मलय । पिनद्धनधाम । आपूजा । मालक्ष्वाय
श्रीमदवार्तने । त्रिनर्तनावभ । गृधादि । वाकं

सुर्य्यार्घ्य । वनार्कं विरुमद्धूपेन स्थापनीलिवं
न्यसेत् । आदि मध्यावसानेषु ॐ त्रितयं विलि
खित । मं मध्ये ल्ली दीपिकं कृत्वा सावित्रीं चैव मूर्द्ध
त्रत । त्रुषकूटं ववन । प्रक्षा महामालि ह्लीं हे नेत्र

र्घं नमः । पुष्पं नमः । ॐ ह्रीं श्री महामालिदिहे नवाय
नमः । गुरुं नत्वा ॐ दिश्रालेपू जा पअनं
पूर्ववत कोनषट । मालनीपर्यन्त । ॐ नमश्च
ल्लीकायै नमः । प्रोहें नववउवाच । ऊ यत्रं मालिनी

निर्म्मलमलनाशिनी ज्ञानशक्ति प्रबुद्धवीवृद्धिहंनमस्तु
श्री उननीसर्वदिगानां स्थानस्थिं व्यवस्थितो नामावी
नावलि दवीकान्तं ... न्नवसति ॥ अयमि पमनत्वं
निर्मलसंस्थितिह ज्ञानमयी निः शस्त्नाव्यकन्नूपाप

नाशनंशक्ति ह्वमिच्छाक्रियाशक्ति लक्ष्वा पून ॥ स्तू
फनाशनन्तुसहस्रं स्तु लाकानन्दयाप्रलयनादशक्ति
स्तुसंस्थायस्य ॥ सहस्त्रनाडकान्तिन्नू पाल्पिवाङ्गुष्ठं नामावे
वामारशीर्ष मनाकान्ति कान्तिविद्युन्नूपावधृताउं

द्व न्धा ह्व लित्व ति का लं॥ ३ ॥ ड म का नक्षी का न सं याद्य
स यन त्वमा प घ स नत्व न्दू या स्म का न व स्ला नि की
ता दित का न्क र्ल जा स्वा न या नि न्दूपा स्व न्दू या य श्री
कें ० स मा हि नी न्दू द्र मो ता न थ न न्द ल कि ॥ स्तुत

ष्का ति मू र्ति र्म नी श्रर्पि नी रा न न्दू पि कि सा न्धि कं
स्का न्दू त्न र्ह ना स्वा व म ॥ श्लि सरी की स स धा ति का
न्दू ग्र ह भा वि मा लं कु ध म हो स न सं ला गि नी था
उ त्म का म्न ना विन्दु सं दा स नि स्म न्दं दं ह स्तू ना स

षसंभकृपनानन्दनिर्वाणसौख्यप्रद । हेनवीहेनवाघा
नक्रीशनूनक्रियनामानिनीकूडमानार्विनन्वडनकि
। दगीसिद्धियारगथ्यनीसिद्धिमानाविनुलब्दना
सिनियान्याहुदे । वाग्विशुद्धानिवासिद्धिवाग

न्वनिमाहुकासिद्धिमिच्छाक्रियामर्गेलांसि
द्धिलब्धीविरुतिमनि । सास्वतरद्यानिनानाय
नीनकृवन्दाकनानऊन्मलीमनुयामहाछ ।
ब्यायागप्रियात्वंऊयंनीवापनाऊिनान्रडल

क्लिं ॥ तस्माद् जीव नवात्मानन्दवेदस्य चात्मग
यानां तामनुमार्ग्गानुगो मनुः ॥ वीनया
नानूनके ॥ मनुं संपूज्य स्पन्द कावंवामके ॥
दिव्यपानात्सर्वं मनुकं कालकापालिनीं

नुकूडन्मदिक्डन्मतिरन्मवङ्पंचषष्ठफङ्
माहवे ॥ आमदवे सत्वनाने ॥ गुहे ॥ द्गुपे
स्पर्यसमधमांस प्रियमनुविद्यावशोगा ॥
सिद्धिः ॥ मनुकं कौलकापालिनि दिव्यवर्या ॥

न्हन्हुक्षेनमस्कान ङु कान स्वाहा स्वधा कान ।
वौषड्वषकान हूँ कान ह्र ल्कान ज्ञालिहि नेत्रेण्य
स त्राज्ञ नेवालिहि । वामदल्छिने व्रक्रम तावलि
ज्ञालिहि । साधके पुत्रहि । माल्हहि । मल्हुलेदीछिने

यागिरियागिनीवु न्हम लापके न्हुह्र क्रीतान सया
गित्यांयाग सिद्धिप्रदद वोलं पघ पत्रापमेलचिः
ऽस्त्रह्पर्लु । मुसंपल्थनन स्मदि थ्वांक विरुछि ।
तासफ्यागाल संखवनी सिद्धिद थ्वांद नारकिगाय

॥ ५८० दनुकंमेकु कालं द्विकालं त्रिकालं वतुथ्यं वषः
द्रस्फवाच्छोसूवीसंस्मनेघ॥ सयमानव॥ सापिथा
वाथिनस्तानुवे पवनाप्रथि संनफसद वीपुत्रानूना॥
मनुमाहालक्ष्मि प्रियम्हमथो नाथिदानानू नकाव

त्रुश्क घूनेघूमहादाषदूखाविमुवनि संस्मलपदवी
लदीयंमूखंपूर्नुवत्रानूकानंस्नद्दियमानिकस
लक्ष्नु लाछ्क्कनंषस्नलंथपिवेद्वाछढवम्यनेनाः
जयालेः॥ कुजावर्द्धपादार्ले लेस्नपिलंनामसंकी

ल नादविम्‌ वा क्लि थाने र्म्म हा वा षि ति ॥ स स्य स
पा पा न विद्व यं न मा हा क्ल न का ना क्षि ग उ प्र हा
ह्लं द ल्भ विन्य त्र क्ष न्द्र व न्द्रा र्क्क प्र ष्या य वे मो लि ॥
मा ला लि स प क्ष किं उ ल्क स लिं उ ले स द्व वी ना मिक

हे न वी हे न व ल्क स न ल्भ ग गा हं क्ष म त्या प ना धं निव ॥
ज्र व स्तु ल्वा म हा य वी रे न व न मा हा स ना ॥ ग गा लिं
ग वि रु घं नि र्ग गां प ल मि ल्व नी ॥ ॐ लि मा लि नी ल
वं ह मा क ॰ ॥ वाक्ष ॥ प ञ्च व लि विय ॥ नें ग मयू ना

सनाय ३। नैंग श्रीॐ कुल पुत्र वद्रक नाथाय ३।
वलि॰। नैंग नना स नाय ३। नैंग श्रीपुरुलन दीपदं
ह किंद वीस हा क्षं कृत्र पालाय ३। वलि। नैंग सिं:
हासनाय ३। नैंग यौंया मिनीस्या ३। वलि। नैंग:

थकवीगया गी ली नां पी० ञाकृत ञा सद ञा ञाग
ञा गहृ ञा कुल ञा संदा हृ ञाय क लिन थ्वा मिनीः
क्षां रव व नीदृव नीर्मे वनी त्र काकृनी थाकृ नी अकृ
नीव तु॰ पंच व ध्रु का कू क न वाकृनी लं य र्थ्ववव

त्वा नांव लिंग्वद्ध २ स्वाहा ॥ नैं ३ त्र गास नाय ३ ॥
ॐ ह्रीं श्रीसिद्धिचामुण्डेश्वरी ३ ॥ वलि ॥ नैं ३ मूषा म्ना
य ३ ॥ नैं ३ अंगी कौतु ॥ ॐ श्रीकुलगणेश नाय २
॥ वलि ॥ आवाहनादि ॥ दलुंगकने थानि विद्ग
ॐ मूलमंत्र जप ॥ ॐ श्रीं ह्रीं स्वाहा १० ॥ ऐं स्वाहा १० ॥
ऐं स्वाहा १० ॥ ॐ ह्रीं स्वाहा १० ॥ ह्रीं स्वाहा १० ॥ स्तोत्र ॥
ॐ थ्या पूत्रं क्री ओ मालं गगनलगन्नु ऊनं कृत्र पंथा
गीनीवरामुञ्जवकन्तु पाद नितर परहनं दि:

ष्वि हानंगनेनां । पुष्पा धाक्षु पदीया म्हिरव स्पूव
लिहि वद्दि गारु बिगां भिवक्रु स पृक्ष कानां विवि
धऊ [illegible] न हिंगारु कि मु कि पुं दा ना ॥ कुंति पञ्च
वलि । विस्वष्ठकृतयालवलि । श्रेंग न ना स ना

प ऊ । नें ग ञ्जौ वचनहै नवकृतपानवव नांवाः
द वी ल कि ग हि गायऊ । वलि । आवाहनादि न
श्री निमूद्रां । कुंति कृ ए वलि । श्री हंवला आवाहनं ।
शिदवपूजा । वलि । गरु पञ्च नत्तं नि षायय । पूजा ॥

ह्रूँ गगनन्नाय ३ । ह्रूँ स्वर्गनन्नाय ३ । ह्रूँ मर्त्यनन्नाय
३ । ह्रूँ पातालनन्नाय ३ । ह्रूँ नागनन्नाय ३ । कृतिपञ्च नन्न
पूजा ॥ ४ ॥ आसनपूजा । ॐ ग आधालनक्तय ३ । ॐ ग
अनन्तासनाय ३ । ॐ ग कन्दासनाय ३ । ॐ ग नाना:

सनाय ३ । ॐ ग पत्रासनाय ३ । ॐ ग कलनासना:
य ३ । ॐ ग कर्णिकासनाय ३ । ॐ ग पद्मासनाय ३ ।
धर्माय ३ । ज्ञानाय ३ । वैलाग्याय ३ । ऐश्वर्याय ३ । अध
र्माय ३ । अज्ञानाय ३ । अवैलाग्याय ३ । अनैश्वर्याय ३

ॐ वृषासनाय २ । ॐ सिंहासनाय २ । ॐ पञ्च
प्रणवनाय २ । नमो ध्यानं । ॐ महाप्रकाश समानं द
न कृकृ ष्कू सू न ज सं । नकासुच तिलाचनं वर्षपाद
निनानूहा । पिंगभिकिन लसकेनं महाकायमहा

दनं । ब्रह्मा चवर्मपनीश्मनं गज चर्मालिनीयकं । न
त्तमस्प्यांस्थ लंकानं नौपूजो द्वि विरूपिनं । वम्भस्त
कपालादि विन्दु रवद्वांगदलकं । विद्युल्का ठिमहा
मऊं कवन्ध हो नलू षिनं । वज्राविष्कू सनद्रानांसि

नमो घृघू पाप्क्री । स्मसिवा सर्वद्र्ह्मान. घ्रक्षालूकः
नवाकुल । त्तुनपुनपिसाचानां क्रि किलालवसं कूले
स्मिसाचमा हा नोद्रु, याभि नियानमक्तिं । नृत्यमाने
मादर्वं लाकानां द्विन कानकं । नमामि श्रीमहाका

लं हेनवंडवनच्छनं । य । पत्येन तुष्यादपि, नरु
नागविनाननी सर्वसिद्धिमवाप्नोति सदा विज्ञयव
र्द्धनी । ॐ ह्रिं क्षनपूर्ष्वं नमः । ह्रि पाइँ लि । ध । क्रौं ।
क्लीं क्लूँ निरवाछ्वच्छन्दमहाहेनवायपादकं । ३ ।

ॐ ग ॐ हूँ ममाला कालाय सर्व्वसकुष्ठमर्द्द नायम
हाकेन वायपाद्द कौं ॥ बलि ॥ ॐ ग वीं वीं वूं ब्लूं:
ववनमा हाकेन वायपाद्द कौं ॥ बलि ॥ द ब्लूं
दयादि षडङ्गेन पूजा ॥ बलि ॥ ग्मगणी पूजा ॥४॥

बलि ॥ ॐ ग हृ सासनाय ॥ ॐ ग वृ षासनाय ॥ ॐ ग म
सू नासनाय ॥ ॐ ग गन्दासनाय ॥ ॐ मरिचासना
य ॥ ॐ गजासनाय ॥ ॐ ग पुष्पासनाय ॥ ॐ ग न
नासनाय ॥ ॐ ग अँ ब्रह्मायनिदक्रौं ब्रसिनी गर

वा. ३। ॐ गं क्रौं नून्है नवायकं माहलपनीदवी
लक्लिगह्लिगाय ३। ॐ गं क्रौं वसुहै नकाय वं क्रु
मालिदवीलक्लिलह्लिगाय ३। ॐ गं क्रौं क्राषहै
नवायहं घ्र म्रवीदवीलक्लिलह्लिगाय ३। ॐ गं क्रौं

स स्कानं त्रि थ्य भ न त्य गु ऊ न र य कृ द्वि न्दुः
सि द्धि लि वा ग्नौ ॥ म ध्य वि श्री म रु मिं प्रे
वृ ष न्रु प्र त्य यं स्वा षि कार्नं सं सु र्षं य न न
स्मै न म न गु नू व नैं हि न वं श्री कृ ऊ णं ॥ ॥

का र
ॐ या ल ल क्लि ह म र था ति प थृ ग नि यू गा ति कः
ना ति प्रँ ना ॐ न स्वा गी ऊ ति या न प न कु न
स द्वि नैं म ष्य सं स्कं सु दी प । ॐ कु च्छी ऊ ल थ
ना र थ प्र क ठि न नि ल य द द्वि न वे वः

कालेश्रीग्रामश्रीपूर्णपीठे पशुजन
यकन्यू त्रिनयन विर्ल्ले । ॐ नम्या श्रेः
कामरूपं मदनकलियुगे सर्व द्रात
यक्कौं तिकाश्रमसमक्षं यपवमेलि

वकलालिंकूर्णयागवृन्दं । ॐ नमश्चादिवु
लिंगं पवेमसूरवकर्न्नं विन्दुरूपं स्वरूपः
क्वौं नित्यानन्दस्वरूपं नदुर्ये निपत्रमीष
ठ प्रकाल विलिन्नं । ह्लूं विश्वाशगमपग

सुमनुरयविमलं त्रिभुयपीठललाह
तेंन्त्रवंध्याफंसमर्स्लस्थितिलयऊननीः
नुड्गक्रिक्रिहदा। तेंगतस्मादवदवी
श्रेकुलकुलमयानन्दध्मतिस्वनत्रा

ॐ गुर्वाङ्घ्रिविन्दुहृन्तापच्छुऊनदननीसि
द्धिदिथ्यौघनूपोक्ष्मौंनिर्यंक्लिन्नासृनकार
गम्मुदिनपदानन्ददात्रिप्रसिध्वाक्षौंकू
र्वंन्त्रीनत्वकामान्ह्रिह्रिनवननर्नूत्रीः

कूजारस्थीनमामि ॥ नेंसंकानीभद्रमार्त्ते
नंश्रूवयंनतदवृता ॥ निर्म्मम४पी०अंकान
सिद्धान्वयप्रकिलिता ॥ दद्विद्रुदमिगुदावा
सिदृढक्लैववकदम्बक ॥ सक्रुनह्यवि

नंसुशीशृम्यावगुदवासिनी ॥ गुदव
न्दुवूनंप्राकौलदामंक्कानरेनव ॥ रंम्भु
श्रीमेनिकादवीवाममाज्ञप्रकह्ययन
॥श्रुन्वयंप्रयपश्चनमषिकानमुकं

क्कलो। उत्मत्रब्रह्मलिंना स्थान स्थितिश्री
कामरूपक। कीलिलिक्षिनी ठुदत्तसि
द्धि ल्लैवेंउ मामानं। तुष्टादंनस्पदव
लीयाजानानि कुलाक्रमं। धोत्रलभक्ष

नन्दनन्यासं कुठक्रमं तथा। पूजितसि
द्धिदं ठुउ सूलि ष्यापनिवदयन॥ ॐन
मामुजमाहामाय सूक्ष्मदर्दपनापन।
त्रकां किनी विज्जूज्वा त्मानादाख विद्धु

मालिनी। अदहसमुत्पन्न अचल विन्ध्य मालि
नी। महाकुन्डले। नीनित्य दसमथ्य व्यवस्थि
त। सामहस्थाग्निमध्य स्थामव्यापिप
नापव। ॐ कानविग्रहाव स्थस। कानाद्वा

द्वमालिनी। वालाग्रनन मसूक्ष्म अन
न्त वाक्षयव्याप्य। हकानाद्धक न्ना मनप
म किंजल्क मालिका। सकानास्थाम हामाः
यवनद लाकपूजिता। न्तकै कनादि

मध्यस्कमर्मभकेकरुदिनी। अष्टुगिः
णल्कनादवीरुदिनीत्रुस्कनंषगे। विद्यु
ल्लनानिरुदवीतुॐगकुटिलाकुनि। त्रु
ष्णाविष्लृत्वनृडुत्वंङ्ग् त्वनत्वसदा। णिः

वः। नुरुपंचमहाप्रनापादमूलद्वव
स्थिका। त्रैलाक्युजननीदवीनमस्कृणः
क्लिनृपिनी। ङ्गजपिंगलमध्यस्कुमृणल
नकुनृपिनी। विन्दुमध्यगनादवीकुटिल

वाद्धवन्द्रिक । तुषानकुदि कालास द्वादश

कावलम्बिनि । उमार्द्धदेह सन मोनी द्वादश

दिव्यवर्द्धस । लुन्धा लुन्धा कनावस्क ह साह्

रथ प्राल क्षयिनी । लीवारब्ध पने मादवि

दक्षिणोल्लिनगमिनी । नासाग्रेवसमू:

र्लि र्नेमथसूत्र प्रवादिनी । फल्लरवपने

मानन्दनाल मूर्द्धि श्वावे क्लिश । नादघः

न्ति कसंघृ ष्ट गुल्म ष्टक समलिंश । स्व

लक्ष्मत्वसंकुद्धधर्म्माधर्म्मप्रवृद्धये । कार्य्य
कानलकल्पत्वं त्रिभुवनादविदुग्रे । पवा
पनगनगुद्धवेगन्यालसस्वगुरूव । सर्व
वर्णधनादवीगुप्तनत्वभिविगुरुग । न

क्रिमुत्रमहामांग्यं व्याहविन्दुवीजसम
विग । कुलनीतमहाहाङ्गसंहानार्लृः
वकानिली । जयावविजयावैवजयन्ती
वापानाजिता । तुम्बुरुविजमधाम्बन

मह्लवापमावनी॥वषमाऊकनीदः
वीषातछअनकावावस्किनात॥तमनीलक्लि
गुलनमलवृहसमलिक॥तमनीता
मनीगमेनीमायार्यंतप्रवादिनी॥८॥

खछदलेनवीदवीक्राषउन्मलुलेनवि
॥पंवानद्दलूनूपस्कालयानूडा८प्रकी
र्लिगा॥अमृनारवनूनूलवलुनमस्कूस्मान
लेनवीदंऊलकटविघ्नत्रुकनानाका

शिरेयाननं॥ नमामि देवदेवेशि सुधा
सुधानं विक्रमं॥ ज्वालामुखि वेगवेगिड
मादेवि नमाम्यहं॥ यामिनी वैत्रिया देवी
गौ नीलक्षिसि नसखेशि॥ हंसस्वनार्द्धक

देवी श्मेमूर्ति वलक्रिमालिनी॥ क्राष्टू
कीलुरुश्मदेवी दुर्ग्गे कात्यायनी नमः॥
नित्यं क्लिन्नासमाख्याता नकांत काकुनापना
॥ ब्राह्मी माहेश्वनी चैव कौमानी वैष्णवी

रूपा ॥ वा वादिनि शिवे च मा हन्त्री चामुण्डा त्वं
रुयानना ॥ योगेसि त्वं हिदवसि कुल
लाष्टक विरुविनि ॥ श्लाष्टक धनीर्द
वील क्षितिलं वहन्रूपिनी ॥ तेन्द्री शिवे व उग्रा

नैयां या ख्याने सम वान्दी ॥ वायव्यां शिवे
काव लिंङ्गाम वउदा हमा ॥ ध्याम
वनुलम कोना भूदहा साउय न्दी का ॥ च
नितै काम्र कान्चे वन्द वी का ठंन थ अष्कं

॥ ग थ क्ष काली उ मा दे वी दे व दु ति न भा स्तु ग ॥
रु डु का ली म हा मा य व म्बो मु न्भुरु या व
हे ॥ म हा रु कु ष्म म हा भ क्ष न म स्कु ण कि:
नृ पि णी ॥ हे उ व स्व मि स्वा हा क्ष द या ना

थं कु नृ ष्म म ॥ ज्ञा ना थि ता म हा मा य नु कदि
ज्ञा नि वि दि नं ॥ य स्ति दं य ध न स्त्रा तं ति सि
ष्म स्त्रे व मा न व ॥ व्रा ष्मा मि वि क्रि ता का:
मा म्भी स्मं रु व रु व ल्न रु ४ ॥ ०ंनि छा लिव

भक्तिसमनत्वंमहामायायास्त्रात्रं समा

प्त ॥४॥ पिअझीनकूकुअं किनीकिनीनवनं

किक्किनीमालझालंउल्लास्यंक्रनस्यवंस

कनस्यपदनं पातहस्तैव नादं । मृद्धः

कंसिंसनदंललललवनंर्धवनंध्या

मनत्वंहनश्रुनादिनाथंत्रदगघन

मिनंऊँतपालनमामि ॥५॥ नक्रामवलंव

लिनपिंगाऊठाकलापंक्षालावलिनमि

तथदषनप्रवनु ॥ सूर्य्योदयाकढक
कान्कनसंगोमेनगौमेनीसूर्यंवद्रूकना
थमर्दनमामि ७ ॥ दन्काबाओगदृष्वंः
समिगल्वल्यंसद्यविघ्नान्कायगम्

श्रीगुंगंबतुगागाणगणपतिगजसिद्धि
सर्वार्थलाभ ॥ ॐ सूमूद्रागजारव्यगणप
वदगणज्ञारवूयालकसंकुंॐ ड्रीं कूंग
णेशेद्विनदविघ्नगणेविघ्निनाथः

न म स्तु ॥ ॐ ज्ञा ज्ञा नी क्री पा सा सू न व न द
मि ना सा ति या म ध्ये ना र क्षा सा रे से नी भ व दु
र्नी र ग व नि धु र दा मा हि का न्य र्म मु
क्षे ॥ सा त स्का सा च वि श्चू ग द्र ग न स के

वा है न वी कृ त पा ला सा न का न क नू पा
यि वि द गु नू द पा या मि नी र्त्वा न मा मि
॥ तु का ना नि ये पा द्वा ह्द सा ङ्कू म न तु अ
वा द न ञ्च प्रि लिंगं वा यू श्री श्री जि ना द्र

॰ नखिलकलनित्राविन्दुनादार्द्धपूर्क
॰ निर्थ्यंसिंस्थन्दूर्भनासमञ्झपनमकला
ले नद्यामनुमूलि ० पायाद्देवानवात्मा
सुकनगुनुवनेलेनव ० श्रीकृञल ॰ ।

मध्येत्रिप्रासनस्फुमदमृदिनमूरिविकूप
घासूदीकाव्रस्कास्माग्रस्फूपत्रस्तूनगलनञ्जू
मितश्रीत्रुयागमदिकृत । पूक्कास्फाविलक्काः
लेवलषसहक्कवजोर्भृंलेहृनेनिसास्फा

विंश्यतु कालेक्रमकूल नूगना पातु वाह्र
ग्रिलवन्धु ॥ रवर्गवा मन्तु सिद्धि पनपूव
विलनं रवसामि नावनं वा लरुसंरं वि
पूलं वलि पलि नऊय स्लंहन सर्व वि:

घ्या। दीर्घायुर्थं कविर्लं निषिनसगुटि
कापाद्कों कामसिद्धि सर्वाल्यनाददनु
त्रूलिपिलिननमाहेनवनानून क्रा ॥
ल्श्रमान क्रा ग्रिन ग्रास्कनलननमिना

मलमानंगगभसिविंवाळीवान्नत्राप
धूतेनउघनामखलानलभोहृ। दवा
मैवस्तुभोरुवनवनकुसुभववेंन्नकुल
लान्हयामज्राकृष्टिकोरखाविदनत्तुम

सावामदिश्वाघमाघ॰॥ माक्कलुयावि
पकुरुवनानूग्रलापावनानेवकुयस्यपवु
लिंकनभोवुक्कनीतुक्ककस्प। दिंस्याळूद
ब्रमुदिनसिनक्षाग्गहप्रलावास्वर्यः

दिव्वांलवछुलवनाञीयसवलिकाया॥
यादवीमषूकेठलश्रमथेनीयायलुमू
ल्हुद्दिनीमामाद्यामहिषामूनऊयक्ने
यनकवीजा(ि)यापामानूम्हनिलम्हः

देषदनघीयादवद्दवाछिमासादवीम
मनञ्जऊनक्रुलछऊल्वलीऊयानकुउ॥
उल्हर्लांवुऊकनिकायनीगनाञासिद्धु
लक्षि॥ पेनाकर्पलसहठिकन्दकूव्द:

षवनानि ४ ले षपासापला । संसानार्लू
वदूषपंकदहनीनिर्ष्कपर्मसर्व्वदाग्री
। मत्यक्षमूरवाम्बांजादणतुजाप्रन स्कि
नावातुव ४ । यासोन्काग्निकूदनाक्लिन

लात्यनूयासामार्कवड्रित्रिपच्चेदनमष्ठ
संक्ला । विघ्नण विलु विषयारथ्यविनीनलः
वास्वालवलाविनपनींप्रुलमामिकालीं
४ । नन्दुर्स्योवभनामनस्पदषणंमष्यल

लाट प्रली सौँ क्षीँ कान्ति मनुष्य ज्योनी व:
ल्मिन स्थापन्ध मी सर्वन। तथासोत्रि पुनान्वि
घ्नु दि नि वा सूँ ल्मे ० स दा ह त्कि ना द्वि घा:
त्वे ० स ह सा ष दे क्ति हिन र्घ ष्ठा नि म्म यी

वा ष्प या। क्ष का भ कु ग मी न न कु द ह न ०
क्षा प क्ष वि श्वे ह ना का त्र क्षा क्ष ऊ नार्द्दन क्ष
ऊ ऊ ग ० क्षु न्दु का द वा स्तु न। कल्पाँ का न ह ग
र्न्न म्ह्य य न श्री सि द्वि या लो ष्य न क्री ता ना ट

कनायकाविऊयनदवामहारेनुवश॥म
हाकालंमहाभैरवंमहाकृष्णाऊनेरैंब्रं॥स्फु
लनुपंमहाकायंकल्पकापालक्षालिनी
रवम्हस्फुठकषनंदवत्रिनत्रंवेलनब्रलं

नमस्तुस्तुमहाकालंमाफसंहालनानां
ॐ॥यथदानह्मादि॥ऊत्रसंध्यादि॥दवद
िना॥नमकाल॥नर्यन॥ब्रीनप्रनाया
दि॥नुपपजा॥वन्दनादिनय॥न्यास

कलिंकाय अङ्गुष्ठाय नमः । कन्यासथनं । क
लिंकाय कनिष्ठाय नमः । कलिंकाय अना
मिकाय नमः । कलिंकाय मध्यमाय नमः ।
कलिंकाय तर्जन्याय नमः । कलिंकाय
अङ्गुष्ठाय नमः । कलिंकाय करतलकरपृ
ष्ठाय नमः । कलिंकाय हृदयाय नमः ।
कलिंकाय शिरसे स्वाहा । कलिंकाय शि
खायै वौषट् । कलिंकाय कवचाय हूं । क

र्लिकायनत्रयोत्रेयवषट् । कर्लिकायाञ्जस्तु
यट्टू । पूजनं । ऊँ ग कालीवज्रन्नवनीला
हृदन्त्रयनम । ३ । जांहृदयादि । सूत्र ।
त्वआयरवलूनाभ्यम्बक्लिकायाँयन
त्यनं । यं सुहृदत्वयालीक्रुँरवञ्जनाथंनम
स्तुन्तेश । कूडूमा क्षादि । ॐनिवपद्मजा । ञ्जय
पसुगाग । वन्दुनितउनक्रवनतय । विधि
र्थ्यीयनमूपूजा । पेन्रूगाह । समस्यह्यय । त्रि

तद्वयाय ॥ सम्यक्त्वा० ॥ सूक्ष्माविंशाति ॥ सू
विनाशा ॥ नकिनआदिनसकलस्त्रीसमअवि
ये ॥ श्री गिरीआदिसकलस्कादेवतादेन
विये ॥ ध्यात धनदाविसमस्कयथाअसन्तिसोग
नयाय ॥ पूनसोगनाशेगथाअसक्तयोल

॥ धनदाओयगमानप्रतिष्ठा ॥ दक्षासं
नयासमयकायारोग्यैतिकायाय ॥ ॐ
ग्यैतिदत्वात्यादि ॥ सग्गोलक्षाय ॥ सौहि
नीक्षाय ॥ आचार्यदक्षिणाविधे ॥ स्थानका
काय ॥ सकलस्कविधे ॥ वैदनादिआभीवी

८ ॥ स्वस्थानयाय ॥ साहित्थयै ॥ सुखेस
वैषी ॥ ॥ सकलस्तुकार्वनाथेदै ॥ वो
रमोऽस्तु ॥ कल्याणं ॥ देवमानवस्येदोक्षाय
॥ ॐ नमः श्रीववनहेनवपूजासमाप्तं ॥

अथ ग्रामभोजनपाद्येता ॥ ॥ पञ्चमकारसहि
तनमद्येहं कुर्यात् ॥ ॥ ऐं ह्रीं शिवशक्तिकाली
मायाकाली महाकाल ॥ विद्याविद्येश्वराः
सर्वे तत्पकुलेश्वरा ॥ १ ॥ कुब्जिकासिद्धिल
क्ष्मी चण्डी चमागामथायवाः ॥ वज्रासिद्धेश्वरी
सन्ध्यागायत्री कुलनायिका ॥ २ ॥ त्रिखण्डाग्नि

पूर्णगिरिस्थामालिनीरुद्रकालिका॥ श्रीपीठस्मव
रुचामुण्डाचण्डामार्कण्डेयनी॥ ३॥ जालन्धु
रविमानावासमण्डला॥ सिद्धाचोग्र
पचण्डेवीरुद्रपन्धुवक्रमण्डलाः॥ ४॥ सिद्धिपीठ
स्थवीविद्यारूपमहालक्ष्मदिनी॥ प्राऊर्लीरव
खलाविद्यावाचस्पत्यामहीसवा॥ ५॥ हृल्ले

खाविद्याऊँक्रभीरुनीद्यैरुनीऊर्या॥ सऊँव
नीमहाविद्यारूपन्धुस्मशानलो॥ ६॥ दिव्या
कविन्दुःरूमाज्यपामालनलवासिनः॥ पीठ
पयो०सँदीहर्कुञ्जपर्कुत्र्यचापिद्याः॥ ७॥ कु
पीम्मुहेनवासिद्धाःचूडाःवीनाःमहीऊर्सः॥ रुक्
लस्रृक्षुपचीवाष्ठोपेवनामनुनायकाः॥ ८॥

यक्षारक्ष टकहृ नाशाद्देवग्रपालाव्ययनमः ॥ ॐ
ह्यं कुदिख्वयाः सर्वं ॐ ह्य कुवफ्र सम्हवा ॥ ९ ॥
सनकव्यसनन्दव्यं ॐ नीयव्यसनामनः ॥ क
पिलव्यास्तु चिव्हेकवारुपक्षसिखस्तुथा ॥ १० ॥
यषिकार्यं समीहकैप्रनवनालयाद्रुमा ॥ ग
द्धं नीत्यानसम्हनामु विमानयसम्हवा ॥

॥ ११ ॥ ॐ ह्य कुवाकुयः सर्वोयस्मयायीगिनो
गक्षाः ॥ गान्धर्वकिंनवाहेतुताम्यातामयोक
स्मलाः ॥ १२ ॥ कुष्माण्डदुहृदुमहुद्धयसकुनावा
मदद्विहाः ॥ ॐ ह्य कुपितवः सर्वपिद्रुमाॐ स्व
वीसकुः ॥ १३ ॥ मूर्कामूर्कामुथे सयफ ॐ ह्य कुने
पितप्पिमा ॥ ३ हूव्यहु हूवन्हूव्यये सिद्धायुगः

धीतः॥१३॥ ॐ ह्रां मां स्फ्रां व वां स्फ्रं र्ग ह्रां ह्रूं ज्रां कूं
कूलज्राधमः॥ सर्वाण्यं यन्त्र विघान्ते श्रें पितृ
यान्कुसंछेदा॥१४॥ हृदयान्कुसंछेन्त्र वेन पितृणाम
वैनिलीदर्केः॥ ॥अथ सर्वीकरण॥ पितृया
दीनां नेयहीकृया७॥ ॥अमूकस्य अमूक
नाम हुं स्वाहा लाकसम्यापच्ये अहूयनोक्षि

कामनार्थ अलि फल्गुमीससहितनश्रीखेद
वामनेनताम्भे स्वाहा॥ हृदयर्द्ध॥ हु॥ ॥नव
कौमे दाक्षानि गान्नपच्यो नैवेद्या॥ आवक
स्मिन्नपथ्ये नैमिनिः॥ ॥हुं निकुलनयेशं॥



पद मौलनीस्तवन [illegible] ॥ सम्पूर्ण

श्रीधागोपास्तोत्र

पद्म मालिनी स्तव श्रीवशा॥ त्न सम्पूर्ण